बाबा मुक्तानन्द के जन्मदिवस महोत्सव २०२० के उपलक्ष्य में उनके साथ एक प्रसंग

एक ही पर्याप्त है : श्रीगुरु के शब्द का आदर करना

बाबा जी की दूसरी विश्वयात्रा के दौरान, हम शाम के समय बाबा जी के साथ सत्संग के लिए एकत्रित होते—सत्संग में हम नामसंकीर्तन करते, ध्यान करते और बाबा जी के प्रवचन को सुनते या प्रश्नोत्तरी सत्र में उनके द्वारा दिए गए उत्तर सुनते। और हर सत्संग के आरम्भ में कोई व्यक्ति बाबा जी के साथ घटित अपना व्यक्तिगत अनुभव सुनाता। अनुभव सुनाने की जब मेरी बारी आई तो मैंने कहा, "मैंने पिछले आठ महीने बाबा जी के साथ बिताए हैं और इन आठ महीनों के दौरान बाबा जी ने मुझसे केवल आठ शब्द कहे हैं।"

मेरा अनुभव समाप्त होने पर बाबा जी ने माइक्रोफ़ोन अपनी तरफ़ किया और कहा, "आज के वक्ता ने कहा कि आठ माह में बाबा जी ने उससे केवल आठ शब्द कहे हैं। एक सच्चे शिष्य को अपने गुरु से मात्र एक शब्द सुनने की आवश्यकता है। आज के वक्ता को अपने गुरु से आठ शब्द मिले हैं। उसे बाकी सात शब्दों को प्रसाद समझना चाहिए।"

अगली सुबह, श्रीगुरुगीता के पाठ के बाद बाबा जी मेरे सामने आकर रुके और उन्होंने पूछा, "आज तुम कैसे हो?"

मैंने उत्तर दिया, "मैं बढ़िया हूँ, बाबा जी।"

बाबा जी ने आगे कहा, "अब हो गए सोलह।"

मैं आश्चर्यचकित रह गया। बाबा जी ने मुझसे हिन्दी में बात की थी पर अंग्रेज़ी में भाषान्तर करने पर वे ठीक आठ अतिरिक्त शब्द हो गए थे। कैसे किया उन्होंने?

©२०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।